ISSN 2393-8412

rnational Registered and Recognized
Related to Higher Education for Social Sciences

INDO ASIAN SOCIAL SCIENCE RESEARCH JOURNAL

(UGC Approved, Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

, Vol.-I Impact Factor 6.10 (GRIFI) Feb. 2021 To July 2021

EDITOR IN CHIEF

DR. JAIDEEP R. SOLUNKE

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

Scanned with CamScanner

Issue - XIV, Vol. I
IASSRJ
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2393-8412
Feb. 2021 To July 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	A Geographical Study of Environmental Pollution **Dr. Jaideep R. Solunke**	1
2	Use of Multimedia in College Libraries **Dr. D. B. Maske**	4
3	A Study of the effect of circuit training on Vertical Jumpingability and skill ability of Weightlifter Players aged 18 to 25 Years **Dr. Sanjay Binarwar**	9
4	Relationship of Playing Ability Between Physical Fitness Components Among Wardha District Men Soccer Players **Dr. Sunil Kumar**	12
5	The effect of Yoga Practice on Expiratory Reserve Volume(ERV) ofair in Lungs **Atul Sharma**	16
6	तबला वाद्य का इतिहास **डॉ. वैशाली देशमुख**	20
7	आरोग्यता प्राप्ति का साधन - हठयोग **डॉ. आलोक तिवारी**	25
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार **कल्याण सर्जेराव घोडके**	30
9	अनुसुचित जमातीच्या संकल्पनेचा विश्लेषणात्मक अभ्यास **नारायण हणमंतराव पांचाळ**	34
10	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार **सुलक्षणा किशनराव इंगोले**	40
11	ख्याल गायनाची साथसंगत करण्यासाठी हार्मोनियम वादकास उपयुक्त पलटे आणि त्यांचे महत्व **प्रविण कासलीकर**	44
12	संक्षिप्त तबला व साथसंगत एक विचार **मिलिंद क. पोटे**	54

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

Scanned with CamScanner

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

IMPACT FACTOR
6.10
ISSN 2393-8412
Indo Asian Social Science Research Journal (IASSRJ)
Issue : XIV, Vol. I
Feb. 2021 To July 2021
www.irasg.com

तबला वाद्य का इतिहास

डॉ. वैशाली देशमुख
संगीत विभाग प्रमुख,
शासकीय ज्ञान-विज्ञान महाविद्यालय,
औरंगाबाद, जि. औरंगाबाद

संपूर्ण भारत में वाद्यों में तबला वाद्य विशेष रुप सें प्रसिद्ध है। पुरा विश्व, संपूर्ण वातावरण, वायु मंडल, निसर्ग नादमय, तालमय, लय से युक्त निरंतर गतिमान है। मानवी जीवन विशिष्ट लय से भरा हुआ है। जनम सें ही मानव की हृदय की गती एक विशिष्ट प्रकार के लय से चलती है। और अगर यह लय किसी कारण बदल जाती है तब मानव का जीवन बिखर जाता है।

लय से युक्त मानवी जीवन जिस प्रकार लय आधारित एक रुप में व्यतीत होता है उसी प्रकार संगीत यह कला भी लय के आधार पर ही गतिमान होती है। संगीत कला लय से ओतप्रोत भरी हुअी है। लय के बिना जीवन, लय के बिना संगीत, असंभव है।

तबला वाद्य एक ऐसा वाद्य है जो उत्तर हिंदुस्थानी संगीत को पूर्णता का रुप देता है। भारत के अनेक विभिन्न भागों से हमे तबला वाद्य की मुर्ति एवं भित्ती चित्र पुरातन शिल्पों से मिलते है जो आधुनिक तबला वाद्य से मिलते जुलते है। अति प्राचीन काल सें ही भारतीय संगीत के अनेक वाद्य प्राचीन गुफाओं में, मंदिरों में, मुर्तियों में चित्रित किये हुए है। ये सभी गुफाअें, मंदिर १६ वी शताब्दी से लेकर ११वी, १२वी शताब्दी के काल की है। तबले सें मिलता–जुलता वाद्य महाराष्ट्र का लोकवाद्य 'सम्बल' है। इसका प्रयोग सदियों से लोकसंगीत में चला आ रहा है। 'दर्दुर' यह वाद्य प्राचीन है और इसका उल्लेख पं. भरत नें 'नाट्यशास्त्र' किया है। यह वाद्य भी तबले से मिलता है। भारतीय संगीत की विकासात्मक शैली प्राचीन संगीत सें प्रेरीत होकर आधुनिक काल तक पहुँची है।

ऋग्वेद ग्रंथ में चार वाद्यों का उल्लेख जैसे आघाटी, बाकुर, गर्गर और वाण मिलता है। इन वाद्यों की सिंध प्रांतमें सिंधु संस्कृतीमें 'डमरु' और 'मश्दंग' का उल्लेख मिलता है।

Scanned with CamScanner
Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

खोज द्रविड और सिंधु लागों ने की है ऐसा माना जाता है।

वैदिक संस्कश्तीमें सामवेदों के पठन के समय भूमीदुंदूभी वाद्य का उपयोग किया जात था।

पं. शारंगदेव नें 'संगीत रत्नाकर' ग्रंथ में चार प्रकारों के वाद्यों का विश्लेषण किया है। तत्, सुषिर, अवनद्ध, धन इन प्रकारों का उल्लेख मिलता है।

पं. भरत के नाट्यशास्त्र में 'मश्दंग' वाद्य का उल्लेख मिलता है। भरत काल में त्रिपुष्कर वाद्य का वर्णन भी मिलता है।

आचार्य कैलाशचंद्रदेव बश्हस्पति 'संगीत चिंतामणि' में यह लिखते है की ग्वारहवी सदी में आरंभ में ही तबले का रीवाज था।

१३वी शती के पूर्व तबले का अस्तित्व था, ऐसा मोहम्मद करम इमान ने लिखा है। उनके अनूसार सुल्तान गयासुद्दिन बलबन के दरबारी कलाकार संगत के लिए जो तालवाद्य प्रयुक्त होता था, वह आज के तबले–बाये की जोडी से अधि साम्य रखता है।

सुप्रसिद्ध संगीताचार्य ठाकुर जयदेव सिंह तबले को प्राचीन भारतीय लोकवाद्य का प्रेरीत रुप है। ऐसा मानते है।

तबला वाद्य के जन्म स्थान के विषय में भी दो मत है। देश के कुछ प्रसिद्ध कलाकार तबले का जन्मस्थान पंजाब मानते है। पंजाब में पखावज का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। पंजाब घराने के तबला वादन पर पखावज वाद्य की छाया दिखाई देती है।

दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले के काल में उस्ताद सिद्धार खॉ ढाढ़ी नामक प्रतिभा संपन्न कलाकार हुए है। प्राचीन ताल वाद्य में परिवर्तन कर पखावज एवं अन्य वाद्यों की वादन शैली, बंदिश, बोलों का आधार लेकर एक ताल वाद्य पर नयी बंदिशों की रचना की। और यह वाद्य तब्ल से आधुनिक काल में तबला वाद्य बन गया।

भारतीय संगीत में वैदिक युग भारतीय इतिहास का एवं संगीत का प्राचीनतम युग माना जाता है। इसीके समकालीन सिन्धु घाटी की सभ्यता में तत्कालीन वाद्यो का परीचय प्राप्त होता है। वैदिक युग इ. २५०० से १२०० का समय माना जाता है। इसी काल में गायन के वाद्य का पूर्ण विकास मिलता है। तीन प्रकार के वाद्य अर्थात अवनद्ध वाद्य, तंतू वाद्य एवं सुषिर वाद्य जिन्हे 'नाण्ठी' कहा जाता था इनका आविष्कार हो चूका था। मंगल वाद्य के रुप में इस काल में 'वीणा' वाद्य का वादन किया जाता था। ऋग्वेद काल मे गायन के साथ वादन का प्रयोग होता था। दुन्दुभी, आदम्बर, भूमि, दुन्दुभि, इत्यादी वाद्यों का प्रचार था। और वीणा में कर्करी वीणा, वाख्य वीणा इत्यादी में थी।

पं. भरतमूनी ने नाट्यशास्त्र ग्रंथ में अवनद्ध वाद्यों की परंपरा वैदिक काल सें ही चली आ रही है ऐसा उल्लेख किया है। अवनद्ध वाद्यों में मश्दंग का स्थान महत्वपूर्ण माना है। 'मश्दंग' के आविष्कर्ता 'स्वाति मूनि' माने जाते है। मश्दंग का सर्वप्रथम वर्णन रामायण और महाभारत काल में पाया जाता है। भरत काल में 'मश्दंग' जैसे वाद्यों का 'पुष्कर' कहा जाता था। मश्दंग वादन का विकास इ.पूर्व की शताब्दियों में ही हो चुका था। पं. भरतमूनि ने

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
Scanned with CamScanner
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

नाट्यशास्त्र ग्रंथ में मश्दंग, पणव, दर्दुर वाद्य की वादनविधी का वर्णन किया है। 'पणव' यह अवनद्ध वाद्य भी अति प्राचीन कालीन वाद्य है। पणव वाद्य वैदिक काल में देवपुजा में उपयोगी था। और रण अथवा युद्ध में भी बजाया जाता था। इसके बाद पं. भरतमूनि ने 'पटह' वाद्य का उल्लेख अवनद्ध वाद्यों में किया है। संगीत पारीजात में पटह का अर्थ 'ढोलक' माना है। प्राचीन काल में मश्दंग के बाद सर्वाधिक प्रचार में 'पटह' वाद्य रहा है। संगीत के महत्वपूर्ण ग्रंथ जैसे मानसोल्लास, भरतभाष्यम्, संगीत रत्नाकर, नाट्यशास्त्र इ. अनेक ग्रंथो में पटह का विस्तश्त विवरण उपलब्ध है।

दुन्दुभि, आडम्बर, भेरी, मश्दंग, पटह इत्यादी अति प्राचीन ताल वाद्य है। इन सभी वाद्यों का वर्णन वैदिक युग से प्राचीन युग तक प्राप्त होता है। प्राचीन काल में मश्दंग, ढोलक, नगाडा, खोल, मादल, खंजरी, डफ तथा तबला इन ताल वाद्यों का विकसित रुप प्राप्त होता है। इन सभी वाद्यों में तबला वाद्य अधिक प्रचार में आया हुआ वाद्य है। वैदिक काल में तबला नामक वाद्य का उल्लेख कही प्राप्त नही होता। मध्ययुग में भी 'संगीत पारीजात नामक जैसे बडे ग्रंथो में भी तबला वाद्य का उल्लेख प्राप्त नही होता है।

तबला वाद्य का इतिहास एवं विकास प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम यह जानना जरुरी है की तबला शब्द की व्युत्पत्ती कैसे हुई? तबला शब्द फारसी 'तब्ल' शब्द से माना जाता है। 'तब्ल' का अर्थ है की वह वाद्य जिसका मुख उपर की और हो तथा जिसका उपरी भाग सपाट हो।

कुछ विद्वान ग्रंथकार तबले की व्युत्पत्ती प्राचीन कालीन दर्दुर वाद्य से भी मानते है। वास्तव में तबले का विकास प्राचीन मश्दंग से ही हुआ है। मश्दंग वाद्य को दो हिस्सों में काट दिया गया है तथा दाहिने हिस्से का नाम 'तबला' और बाए हिस्से का नाम 'बायॉ' रखा गया।

तबले की परंपरा अनेक वर्षो से लगभग ३०० वर्षों से चली आ रही है। अति प्राचीन काल से हमे अनेक वाद्यों की परंपरा विकसित होते हुए दिखाई देती है उन्ही अनेक वाद्यों में तबला वाद्य भी विकसित हुआ होगा। भारत की अनेक प्राचीन सभ्यताओं में और अनेक मंदिरों की शिल्पकला में गुफाओं में भुवनेश्वर, कोणार्क, अमरावती, एलोरा, बदामी जैसे गुफाओं की शिल्पमुर्तियों में अनेक ताल वाद्य मिलते है जिनका स्वरुप आज के तबला वाद्य से मिलता है। ये मंदिर, गुफाऐं इ.स. पूर्व २०० से १६वी शताब्दी तक के कालखंड में मिलती है। सभी मुर्तिया एवं शिल्पकला उस काल के जनजीवन का प्रतीक है, उदाहरण है ऐसा माना जाता है। 'दर्दुर' एक प्राचीन कालीन अवनद्ध वाद्य है। जिसका उल्लेख नाट्यशास्त्र में मिलता है। 'नकारा' मतलब 'नगारा' यह वाद्य भी तबला जोडी से मिलता है। महाराष्ट्र के लोकसंगीत का वाद्य 'सम्बल' यह तबला वाद्य से मिलता जुलता वाद्य है। कुछ विद्वानों के मतानुसार आज का सम्बल वाद्य ही तबला वाद्य का प्राथमिक, पूर्व रुप था। कुछ विद्वानों के मतानूसार पंजाब प्रांत का 'दुक्कड' नामक वाद्य ही तबला वाद्य का उद्गम है।

इ.सन १८५५ में हकीम मोहम्मद करम इमाम द्वारा उर्दु भाषा में लिखी गई 'मऊदन–ऊल–मुसीकी' ग्रंथ में तबला वाद्य के आविष्कारक का नाम अमीर खुसरो लिखा

Scanned with CamScanner
Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science

तबले के विविध बाजों एवं घरानो के इतिहास और परंपरा का विस्तश्त वर्णन के लिये 'बाज' शब्द का अर्थ जान लेना महत्त्वपूर्ण है। वादन शैली को 'बाज' कहते है।

तबले के प्रचलित बाज मुख्य रुप सें दो भागों में बॉट सकते है।

१) पुरब बाज २) पश्चिमी बाज

पुरब बाज के अंतर्गत लखनऊ, फरुख्खाबाद और बनारस घरानों की वादनशैली आती है। पश्चिमी बाज में दिल्ली और अजराडा घरानों की वादनशैली आती है।

तबला वादनशैली के प्रमुख घरानों में १) दिल्ली २) अजराडा ३) लखनऊ ४) फरुख्खाबाद ५) बनारस ६) पंजाब, इसके अतिरिक्त इंदौर, विष्णुपूर, ढाका, जयपूर, हैदराबाद, मुरादाबाद, भटौला आदि परंपरायें भी विकसित हुई है।

१) दिल्ली घरानें के प्रवर्तक उ.सिद्धार खॉ ढाढ़ी ने चॉद खॉ, पुत्र बुगरा खॉ, घरीट खॉ उनके साथ विकसित की है।

२) मीरु खॉ और कल्लु खॉ ने अजराडा घरानें शुरुवात की है।

३) मौदु खॉ और बक्शु खॉ ने लखनऊ में वादन शैली में परीवर्तन कर नया लखनऊ घराना तयार कीया।

४) पं. रामसहाय ने तबला वादन में प्रवीणता प्राप्त कर बनारस घराने की परंपरा विकसित की है।

५) उं. हाजी विलायत अली खॉ फर्रुख्खाबाद के रहने वाले थे उन्हों ने फर्रुख्खाबाद में अपनी नयी परंपरा आरंभ की और उसी परंपरा को फर्रुख्खाबाद घरानें से जाना जाता है।

६) पंजाब घराना यह एक मात्र ऐसा घराना है जो दिल्ली घरानेंसे संबंध नही रखता। यह घराना तबला वादन का एक स्वतंत्र घराना है। और उस घराने की वादनशैली मश्दंगशैली के अधिक निकट है। इस घराने के प्रवर्तक मश्दंग वादक लाला भवानीदास थे।

इन घरानों तक तबला वाद्य विकसित हुआ दिखाई देता है। आज भारतीय संगीत के अभिजात संगीत में साथसंगत के लिये ज्यादा सें ज्यादा तबला वाद्य का ही प्रयोग किया जाना है। और संपूर्ण विश्व नें तबला वाद्य एक सुप्रसिद्ध भारतीय वाद्य के रुप में जाना जाता है।

संदर्भ संकेत :-

१) पखवज और तबला के घरानें एवं परंपराये – डॉ. आबान ई. मिस्त्री
२) तबला – अरविंद मुळगावकर
३) संगीत विशारद – वसंत
४) संगीत शास्त्र परिचय – मधुकर गोडसे
५) स्वरावली – वसंत
६) संगीतशास्त्र – मोहना मार्डीकर

Scanned with CamScanner

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science